पद ४२

(राग: पिलु - ताल: त्रिताल)

शेषाचलवासी देवा धांव त्वरेनें ।।ध्रु.।। काय करूं मज कांही सुचेना। वृत्ति नसे एक्या ठायीं।।१।। षड्वैरी मज अतिशय गांजिती। जाच फार झाला जीवा।।२।। माणिक म्हणे प्रभु सोडवी येथुनि। द्यावा चरणाचा ठावा।।३।।